ए॰ए॰एम॰ चिल्ड्रेंस एकेडमी, कटिहार के शताब्दी– समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–18.11.2016, समय–11.15 बजे, स्थान–कटिहार)

ए॰ए॰एम॰ चिल्ड्रेंस एकेडमी के शताब्दी– समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित माननीय सांसद श्री तारिक अनवर जी, स्थानीय विधायक श्री तारकिशोर प्रसाद जी, विधान परिषद् सदस्य श्री अशोक अग्रवाल जी, पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री निखिल कुमार चौधरी जी, राज्य के पूर्व मंत्री डॉ॰ राम प्रकाश जी, नगर के मेयर श्री विजय सिंह जी, विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री रामानंद सिन्हा जी, उपाध्यक्ष श्री अनिल चमड़िया जी, सचिव प्रो॰ पी॰एन॰ केशरी जी, प्राचार्य श्री एस॰ बोस जी, विद्यालय के सभी शिक्षकगण, विद्यार्थीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

कटिहार के शिक्षा जगत् में विगत् 50 वर्षों से कीर्तिमान स्थापित करनेवाले ए॰ए॰एम॰ चिल्ड्रेंस एकेडमी के स्वर्ण–जयंती समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। 50 वर्षों की अपनी निरंतर प्रगति–यात्रा से जिस संस्थान ने अपना एक गौरवशाली इतिहास रचा है, उसके स्वर्ण–जयंती समारोह में उपस्थित होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। सन् 1967 में जब यह शहर पूरी तरह नगरीय सुविधाओं से सम्पन्न नही था, तब उत्कृष्ट कोटि के शिक्षण–संस्थान की स्थापना करना एक बहुत बड़ी उपलब्धि रही होगी। तब से लेकर आज तक इस एकेडमी ने अनवरत शिक्षा का अलख इस क्षेत्र में जगाये रखा है। इस साहसिक कदम के लिए एकेडेमी के संस्थापकों को जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम है।

प्यारे विद्यार्थियों! शिक्षा आदर्श समाज की एक मजबूत आधारशिला रखने का काम करती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से ही अच्छे

नागरिक तैयार होते हैं और अच्छे नागरिकों से ही एक सशक्त, सुसंस्कृत और सुविकसित प्रदेश और राष्ट्र का निर्माण होता है। शिक्षा के इसी मूल उद्देश्य को लेकर चलने वाले शिक्षण संस्थान ही ख्याति अर्जित करते हैं। हर शिक्षण संस्थान को शुरूआती दौर में अपने सीमित संसाधनों के बल पर ही गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराने का गुरूतर दायित्व वहन करना पड़ता है। जो शिक्षण संस्थान अपने इस गुरूतर दायित्व को बखूबी निभा पाते है, वे तेजी से प्रगति करते हैं और शिक्षा जगत् में उनकी विशिष्ट पहचान भी बनती है। मुझे बताया गया है कि इस शिक्षण–संस्थान के कई मेधावी छात्र–छात्राओं ने सरकारी और गैर–सरकारी क्षेत्रों में विभिन्न शीर्ष पदों पर सेवा के सुअवसर प्राप्त करने में सफलता पाई है। उच्च पदों पर आसीन इस विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र निश्चय ही आज इस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। अंग्रेजी माध्यमों से संचालित निजी शिक्षण–संस्थानों पर सामान्यतः यह आरोप लगता रहा है कि यहाँ शिक्षा प्राप्त करना काफी खर्चीला है और ये शिक्षण–संस्थान आम आदमी की पहुँच के बाहर होते हैं। मुझे जानकारी दी गई है कि इस शिक्षण–संस्थान में गरीब तबके के विद्यार्थियों के लिए कम व्यय पर शिक्षण की व्यवस्था रखी गई है। मेरा सुझाव होगा कि विद्यालय में नामांकन में पूर्ण पारदर्शिता होनी चाहिए। साथ ही समाज के अभिवंचित वर्ग के विद्यार्थियों को कम शुल्क में पढ़ाई की सुविधा उपलब्ध कराने एवं विद्यालय–प्रबंधन की ओर से प्रोत्साहन स्वरूप छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

प्यारे विद्याथियों! शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ रोजगार के लिए, युवकों को तैयार करना ही नही है। इसका व्यापक उद्देश्य एक दृढ़निश्चयी और राष्ट्र के लिए समर्पित नागरिक भी तैयार करना है। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन तो है ही, लेकिन इससे भी आगे बढ़कर देश

और समाज के लिए कई ऐसी महत्वपूर्ण जिम्मेवारियाँ हैं, जिन्हें भविष्य में आपको पूरा करना है। आपको केवल अपने लिए ही एक बेहतर और सुन्दर जीवन की जरूरतें हासिल नही करनी हैं, बल्कि पूरे समाज और देशवासियों के लिए एक सुरक्षित–सुन्दर दुनिया का निर्माण करना है। इस क्रम में आपको अपनी गौरवमयी परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों को सँजोए रखते हुए पूरी उदारता और सहिष्णुतापूर्वक व्यापक मानवीय हितों के अनुरूप अपना आचरण प्रस्तुत करना होगा।

प्यारे विद्यार्थियों! भारत के महान संत स्वामी विवेकानन्द जी, जिन्होंने अमेरिका की एक धर्म– सभा में जाकर और 'शून्य' पर अपना अत्यन्त सारगर्भित व्याख्यान देकर, पूरी दुनियाँ का ध्यान आकृष्ट किया था। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य पर अपने एक संबोधन के दौरान कहा था कि ''जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नही बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, उसे शिक्षा नहीं कहा जा सकता है। दरअसल, हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शांति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़े होना सीखें'' –मतलब यह कि नैतिकता, आत्मबल, परोपकारिता और सबसे ऊपर देशभक्ति, एक आदर्श विद्यार्थी के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

इस विद्यालय ने 50 वर्षों की अपनी प्रगति–यात्रा पूरी कर ली है और एक शिक्षण–संस्थान के लिए जिन संसाधनों और आधारभूत संरचनाओं की मूलभूत आवश्यकता होती है, उसे हासिल कर लिया है। मुझे आशा है कि विद्यालय–प्रबंधन इस संस्थान को तकनीकी तौर पर और अधिक सुदृढ़ीकृत करते हुए इसे आधुनिक शिक्षण व्यवस्था के अनुरूप बनायेगा। इस शताब्दी–समारोह के सुअवसर पर विद्यालय –प्रबंधन–समिति के सभी अधिकारियों, सभी पूर्ववर्ती छात्रों, अध्ययनरत

विद्यार्थियों को अपनी बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि यह संस्था आगे भी इस इलाके में शिक्षा के प्रकाश को चतुर्दिक फैलाती रहेगी। मेरी शुभकामना है कि–

''कुछ कर दिखायें ऐसा, इतिहास जगमगाये।
धरती हरी–भरी हो, आकाश मुस्कुराये।''

आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।